MA - Sem. III CC-X

इकाई - 2 उत्तराध्ययन प्रथम - विनयसूत्र

Q. उत्तराध्ययनसूत्र के प्रथम विनयसूत्र का सारांश लिखें ?

Ans— अर्धमागधी आगम साहित्य के अन्तर्गत उत्तराध्ययन सूत्र का अपना एक अलग महत्व है। प्रस्तुतः आगम साहित्य विषय का विवेचन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उत्तराध्ययन सूत्र का प्रारंभ होता है सूत्र से विनय अहंकार शून्यता है, अहंकार की उपस्थिती में विनय केवल औपचारिक होता है विनय के सन्दर्भ में एक प्रसंग का वर्णन करते हुए विनय के प्रति कहा गया है कि बायजीद एक सूफी संत थे उनके पास एक व्यक्ति आया उसने नमस्कार कर निवेदन किया की कुछ जिज्ञासाएँ है। बायजीद ने मुस्कुराते हुए कहा मैं शरीर को झुकाने की बात नही करता, तुम्हारा अहंकार झुका है की नही उसे झुकाओ विनय और अहंकार में कही भी तालमेल नही है।

अंह के शून्य होने से ही मानसिक वाचिक और कायिक विनय प्रतिपादित होगा व्यक्ति का रूपांतरण हो गया कई बार व्यक्ति बाह्य रूप से नम्र दिखता है किन्तु अन्दर अंह से अकड़ा रहता है। बिना अहंकार को जीते व्यक्ति विनय नही हो सकता। विनय का सही अर्थ है अपने आप को अंह से मुक्त करना जब अंह नष्ट हो जाता है तब व्यक्ति गुरु के अनुशासन को सुनता है और जो गुरु कहते है उसे स्वीकार करता है। अपने मन को अंह से मुक्त करता है। विनित शिष्य को

यह परिबोध होता है कि किस प्रकार बोलना किस प्रकार बैठना तथा किस प्रकार खड़ा होना चाहिए वह प्रत्येक बात पर गहराई से चिंतन करता है। आज जन जीवन में अशांति और शासनहीनता के कुरूपे बादल मँडरा रहे हैं। उसका मूल कारण जीवन के उस काल से ही व्यक्ति के जीवन में विनय का अभाव होना है, और यही अभाव पारिवारिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में बढ़ता जा रहा है जिससे न परिवार के लोग सुखी हैं एवं न राष्ट्रो पर शासन करने वाले लोग भी शांति में है।

विनय सूत्र नामक प्रथम अध्ययन में विनय को प्रतिपादित करते हुए उसकी महिमा और गरिमा को विस्तृत विवेचन किया गया है इस सूत्र के अन्तर्गत जो गाथाएँ वर्णित है उसकी तुलना महाभारत, धम्मपद, इत्यादि से भी की गई है। इसमें वर्णित गाथाओं के माध्यम से विनीत शिष्य के लक्षणों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। उसके बारे में बतलाया गया है कि उसे गुरुजनों को श्रद्धा पूर्वक आदर करना चाहिए, यदि गुरुजन के किसी तिरस्कार वचन को सुनकर, अपने मन में क्रोध नहीं लाना चाहिए और यदि कारणवश क्रोध आ भी जाये तो उसे निष्फल बना देना चाहिए। इसी प्रकार मान माया और लोभ आदि कषायों को भी उक्त विचार सारणी से निष्फल बनाने का प्रयत्न करना चाहिए

इस प्रकार जब हम उत्तराध्ययन सूत्र में वर्णित विनय सूत्र का अध्ययन करते हैं तो यह पाते हैं कि विनय शीलता का अर्थ यहाँ दासता, दीनता या गुरु की गुलामी नहीं है न स्वार्थ की

सिद्धि के लिए किया गया कोई बाह्य उपाय है और न कोई औपचारिकता है। यह सामाजिक व्यवस्था मात्र भी नहीं है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में उत्तराध्ययन सूत्र में विनय स्वरूप का अभिप्राय मोक्ष विनय से है।